Result Mitra Daily Magazine

बॉम्बे से महाराष्ट्र – चुनाव का दौर

➢ हालिया संदर्भ :

- प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद के मामले में भारत का सबसे अमीर राज्य और बड़े व्यवसायों, बड़ी चीनी सहकारी समितियों एवं बॉलीवुड के लिए प्रसिद्ध महाराष्ट्र कभी कांग्रेस का गढ़ हुआ करता था, लेकिन पिछले कुछ समय से राज्य का राजनीतिक परिदृश्य लगातार परिवर्तित होता रहा है।

➢ बॉम्बे प्रांत :

- पुराना बॉम्बे प्रांत सिंध (अब पाकिस्तान में) से लेकर उत्तर-पश्चिमी कर्नाटक तक फैला हुआ था, साथ ही इसमें वर्तमान गुजरात एवं वर्तमान महाराष्ट्र का लगभग दो-तिहाई हिस्सा (कुछ क्षेत्र रियासती इलाके थे) शामिल था।
- दो मराठी भाषी क्षेत्र बॉम्बे प्रांत का हिस्सा नहीं थे, जिनमें एक विदर्भ, जो मध्य प्रांत (वर्तमान मध्य प्रदेश) एवं दूसरा मराठावाड़ा, जो हैदराबाद रियासत का हिस्सा था, शामिल थे।

➢ नए राज्य का आंदोलन :

- 1920 के दशक में ही एक एकीकृत मराठी भाषा राज्य की मांग उठने लगी थी, हालांकि आजादी के बाद इस मांग ने जोर पकड़ी।
- 1953 में बॉम्बे राज्य, विदर्भ एवं मराठावाड़ा को एकजुट करने के लिए मराठी नेताओं ने 'नागपुर समझौते' पर हस्ताक्षर किए जबकि गुजराती समुदाय ने अलग राज्य के लिए अलग आंदोलन चलाया।

- बंबई, जो आर्थिक केंद्र बनी हुई थी, इन दो आंदोलनों के बीच फंस गई।
- बंबई को आर्थिक शक्ति बनाने में गुजरातियों का योगदान ज्यादा महत्वपूर्ण था, लेकिन यह चारों तरफ से मराठा–भाषी जिलों से घिरा हुआ था। ऐसे में जैसे-जैसे बॉम्बे प्रांत के विभाजन की संभावना बढ़ती जा रही थी, यह उम्मीद लगाया जा रहा था कि बंबई को केंद्रशासित प्रदेश बनाकर रखा जाएगा ताकि विवाद कम हो। यहां तक कि तत्कालीन प्रधानमंत्री नेहरू ने भी अप्रत्यक्षत: यही घोषणा की थी।
- राज्य पुनर्गठन आयोग, 1956 ने बॉम्बे को द्विभाषी राज्य बने रहने देने की सिफारिश की, क्योंकि यह गुजराती एवं मराठी समुदायों के लिए 'महान सहकारी उद्यम क्षेत्र' के रूप समान महत्व रखता था। साथ ही आयोग ने विदर्भ को राज्य का दर्जा देने की सिफारिश की।
- केंद्र ने आयोग की सिफारिशों को नहीं माना और विदर्भ को मराठावाड़ा के साथ बॉम्बे राज्य का हिस्सा बना दिया।
- इस नए राज्य निर्माण से गुजराती एवं मराठी दोनों समुदाय नाखुश थे, जिसके कारण आंदोलन जारी रहा।
- अंततः 1 मई 1960 को केंद्र ने 'बॉम्बे' के विभाजन पर सहमति जताई और बॉम्बे को विभाजित कर गुजरात एवं महाराष्ट्र नामक दो नए राज्यों का निर्माण हुआ।
- गुजरात एवं महाराष्ट्र को तत्कालीन बॉम्बे राज्य के 396 विधानसभा सीटों में से क्रमशः 132 एवं 264 सीटें मिली।

➢ राज्य पुनर्गठन आयोग :

- राज्य पुनर्गठन आयोग के अध्यक्ष फजल अली थे एवं इसके दो अन्य सदस्य के. एम. पणिक्कर एवं पंडित हृदयनाथ कुंजरु थे।
- यह अधिनियम (राज्य पुनर्गठन) 1956 में पारित हुआ, जिसके अनुसार तत्कालीन भारत में 14 राज्य एवं 6 केंद्रशासित प्रदेश थे।
- यह आयोग 1953 में गठित हुआ था।
- इससे पूर्व चार सदस्यीय 'धर आयोग' एवं JVP आयोग (Jawahar Lal Nehru, Vallabh Bhai Patel और Pattabhi Sitarammaiya) भी राज्यों के भाषाई आधार पर पुनर्गठन के प्रश्न पर गठित हो चुकी थी।

Note :- 1 अक्टूबर 1953 को आंध्र प्रदेश का नए राज्य के रूप में निर्माण हुआ, जो भारत में भाषाई आधार पर गठित होने वाला पहला राज्य था।

➢ कांग्रेस का प्रभुत्व :

- स्वतंत्रता के बाद के वर्षों में बॉम्बे प्रांत में कांग्रेस एकमात्र शक्तिशाली राजनीतिक पार्टी थी।
- 1951–52 में हुए पहले विधानसभा चुनाव में राज्य के कुल 317 विधानसभा सीटों में से 269 सीटें कांग्रेस ने जीती।

  Note :– राज्य में उस समय कुल 268 निर्वाचन क्षेत्र ही थे, लेकिन कुछ निर्वाचन क्षेत्रों में एक से अधिक सदस्य विधानमंडल भेजे जाते थे।

  Note :– तत्कालीन समय में नासिक–इगतपुरी देश का एकमात्र तीन सदस्यीय (1 सामान्य श्रेणी, 1 SC और 1 ST) विधानसभा क्षेत्र था।

- पहले चुनाव के बाद मोरारजी देसाई बॉम्बे के पहले मुख्यमंत्री बने।
- 1955–56 में जब संयुक्त महाराष्ट्र क्षेत्र में हिंसक आंदोलन हुए, जिसके बाद मोरारजी देसाई को केंद्र में वित्त मंत्री बना दिया गया, जबकि यशवंत राव चव्हाण (मराठी) को अगला सीएम बनाया गया।
- चव्हाण के नेतृत्व में 1957 के चुनाव में कांग्रेस ने कुल 396 सीटों में से 234 सीटें जीती।
- नवनिर्मित महाराष्ट्र में 1962 में हुए पहले चुनाव में कांग्रेस ने 264 सीटों में से 215 सीटें जीती एवं मारोतराव कन्नमवार सीएम बने लेकिन उनके असमय निधन के बाद बसंत राव नाइक सीएम बने, जो अगले 12 वर्षों तक पद पर बने रहे।
- 1967 के विधानसभा चुनावों में बिहार, उड़ीसा, UP, WB, हरियाणा, तमिलनाडु जैसे राज्यों में कांग्रेस को झटका लगा, लेकिन महाराष्ट्र में 270 सीटों में से 203 सीटें कांग्रेस ने जीती।

➢ कांग्रेस का विभाजन :

- 1969 में कांग्रेस दो गुटों में बंट गई, जिसमें एक कांग्रेस (O) का नेतृत्व मोरारजी देसाई ने किया, वहीं कांग्रेस (R) का नेतृत्व इंदिरा गांधी ने किया।
- 1972 के चुनाव में कांग्रेस (O) को एक भी सीटें प्राप्त नहीं हुई, जबकि कांग्रेस को 270 में से 222 सीटें प्राप्त हुई।
- आपातकाल (1975) से कुछ समय पूर्व शंकर राव चव्हाण को CM बनाया गया, जो संजय गांधी के गरीबी थे।

➢ हिंदुत्व का उदय :

- राजनीतिक कार्टूनिस्ट बाल ठाकरे ने 1966 में मराठी शिवसेना का गठन किया, जिसका पहला विधायक 1972 में बना।

- 1980 में बीजेपी के उदय के बाद दोनों पार्टियां स्वाभाविक सहयोगी के रूप में एक–दूसरे के करीब आ गई।
- 1990 में बीजेपी एवं शिवसेना के सीटों की संख्या क्रमशः 52 एवं 42 हो गई।
- 1992 में बाबरी मस्जिद विध्वंस बॉम्बे (मुंबई) में हुए दंगों और बंबई में हुए सिलसिलेवार बम धमाकों ने हिंदुत्व दक्षिण पंथ को बढ़ावा दिया।
- 1995 में शिवसेना–बीजेपी गठबंधन की सरकार बनी एवं मनोहर जोशी (शिवसेना)सीएम तथा गोपीनाथ मुंडे (बीजेपी) डिप्टी सीएम बने।

➢ बदलाव का दौर :

- 1999 के चुनाव में शिवसेना–BJP बहुमत नहीं जुटा पाई, जिसके कारण NCP (शरद पवार) एवं कांग्रेस के गठबंधन की सरकार बनी।
- कांग्रेस के विलासराव देशमुख CM जबकि NCP के छगन भुजबल डिप्टी सीएम बने।
- कांग्रेस–NCP ने अगले 15 वर्षों तक शासन किया, जिस दौरान विलासराव (1999–2003 एवं 2004–08), सुशील शिंदे (2003–04), अशोक चव्हाण (2009-10) एवं पृथ्वीराज चव्हाण (2010–14) ने सीएम का पद संभाला।

➢ मोदी का दौर :

- 2014 के विधानसभा चुनाव में अमित शाह, नितिन गडकरी एवं उद्धव ठाकरे ने बीजेपी–शिवसेना का नेतृत्व किया एवं गठबंधन में 188 सीटें जीतकर सरकार बनाई।
- देवेंद्र फडणवीस सीएम बने।
- 2019 के चुनाव में भी यह गठबंधन विजयी रहा, लेकिन शिवसेना में गठबंधन तोड़ दिया एवं शिवसेना, कांग्रेस एवं NCP ने नया गठबंधन बनाकर सरकार बनाई।
- यह सरकार भी तब गिर गई, जब एकनाथ शिंदे ने शिवसेना को विभाजित कर बीजेपी से गठजोड़ कर लिया।
- एकनाथ–फडणवीस गुट को NCP (अमित पवार) का भी समर्थन मिला एवं एकनाथ शिंदे के नेतृत्व में नई सरकार का गठन हुआ।